जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

भगवान कोई अलग नहीं होते। यदि सही दिशा में पुरुषार्थ करे तो प्रत्येक जीव भगवान बन सकता है। ह्न **तीर्थंकर भगवान महावीर और उनका सर्वोदयतीर्थ, पृष्ठ-84**

वर्ष : 29, अंक : 2 | सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय), 2006 | प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

भगवान महावीर जयंती हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ भगवान महावीरस्वामी जन्मजयन्ती के शुभावसर पर दिनांक 11 अप्रैल को प्रात: 7 बजे श्री टोडरमल स्मारक भवन में महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों सहित बापूनगर जैनसमाज की उपस्थिति में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा विधिवत् ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी पाटनी, समाचार जगत के सम्पादक श्री राजेन्द्रजी गोधा आदि अनेक विशिष्ट महानुभावों की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

तत्पश्चात् श्री दि. जैन मन्दिर लालकोठी तक प्रभात फेरी का आयोजन किया गया, वहाँ श्रीजी प्रक्षाल व ध्वजारोहण के उपरान्त सभी साधर्मीजन पुन: प्रभात फेरी के साथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय बापूनगर पहुँचे। वहाँ भी ध्वजारोहण के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को ब्र. यशपालजी जैन का प्रासंगिक उदबोधन प्राप्त हुआ।

* राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति महावीर पार्क से भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें 11 भव्य झांकियों के माध्यम से जैनधर्म व भगवान महावीर के जीवन चरित्र संबंधी विविध प्रसंगों का जीवन्त चित्रण किया गया। शहर के प्रमुख मार्गों से होकर शोभायात्रा रामलीला मैदान पहुँची, जहाँ विशाल धर्मसभा का आयोजन हुआ।

समारोह में 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज का उद्बोधन विशेष रहा। इस प्रसंग पर श्री जयानन्दविजयजी महाराज, मुनि विशालसागरजी, श्री दिव्यानन्दजी महाराज भी उपस्थित थे।

* **दिनांक 8 अप्रैल** को श्री महावीर पब्लिक स्कूल सी-स्कीम में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में **भगवान महावीर और उनका दर्शन** विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्यवक्ता के रूप में उपस्थित राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित प्रो.दयानन्द भार्गव ने कहा कि भगवान महावीर जैनों के ही नहीं; अपितु मानवमात्र के भगवान हैं। अध्यक्षीय भाषण के रूप में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, अत: भ.महावीर के दर्शन की प्रासंगिकता और बढ गई है।

इस प्रसंग पर डॉ. श्रीयांस सिंघई एवं श्री राजकुमारजी काला ने भी विचार व्यक्त किये।

साधना चैनल देखना न भूलें

रात्रि 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना न भूलें। कोई समस्या हो तो श्री पीयूषकुमारजी शास्त्री से 09414717829 पर सम्पर्क करें।

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

कोलकाता : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर पद्मोपुकुर में दिनांक 31 मार्च से 5 अप्रैल, 2006 तक श्री फूलचन्दजी भागचन्दजी राजमलजी कमलकुमारजी अशोकजी पाटनी परिवार द्वारा सिद्धचक्रमण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रतिदिन प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक के अन्तर्गत रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री तथा ब्र. सुमतप्रकाशजी द्वारा विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित मनीषजी पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ एवं पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल ने सम्पन्न कराये।

स्थानीय विद्वानों के रूप में पण्डित मेहुलजी मेहता एवं पण्डित अशोकजी रायपुर का सहयोग प्राप्त हुआ।

उपकार दिवस सानन्द सम्पन्न

दिल्ली : यहाँ श्री आदिनाथ पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ एवं आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के 117 वें जन्म दिवस के पावन प्रसंग पर अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र में 8 एवं 9 अप्रैल को द्विदिवसीय समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर दिनांक 8 अप्रैल को विद्यमान बीस तीर्थंकर भगवन्तों सहित भगवान आदिनाथ आदि का मस्तकाभिषेक तथा 9 अप्रैल को भगवान महावीर पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ।

दिनांक 8 अप्रैल को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का उपकार दिवस से संबंधित विशेष प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही मुख्यअतिथि श्री पुनीत जैन (प्रकाशक नवभारत टाइम्स) का भी विशेष उद्बोधन प्राप्त हुआ। दोपहर में विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसका संचालन डॉ. सुदीप जैन ने किया। संगोष्ठी के पूर्व गुरुदेवश्री के जीवन-चरित्र संबंधित वी.सी.डी. का प्रसारण किया गया। रात्रि में आयोजित आध्यात्मिक कवि सम्मेलन का संचालन डॉ. वीरसागरजी जैन ने किया।

समारोह में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. कैलाशचन्दजी अचल, पण्डित गोकुलचन्दजी सरोज, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा आदि का समागम प्राप्त हुआ। दोनों दिन गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचन का लाभ मिला। सभी कार्यक्रम ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। ह्न **आदीश जैन**

देवलाली शिक्षण-प्रशि

क्षण शिविर की पत्रिका

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

ह्न रतनचन्द भारिल्ल

2. अपने-अपने भाग्य का खेल...

ज्ञानेश और धनेश एक ही मुहल्ले में रहते थे। एक ही साथ खेले और मैट्रिक तक एक ही स्कूल में साथ-साथ पढ़े। बचपन में दोनों की दाँत-काटी रोटी थी। दोनों एक-दूसरे के लिए अपनी जान देते थे, एक-दूसरे का वियोग दोनों को बर्दाश्त नहीं था। पर न जाने क्यों ? किशोरवय में कदम रखते-रखते दोनों की विचारधाराओं में पूर्व-पश्चिम जैसा महान अन्तर आ गया। इसे भी भाग्य का खेल ही समझना चाहिए।

ज्ञानेश ने तो ग्रेजुएशन के बाद पढ़ना ही छोड़ दिया और धनेश टेक्नीकल ऐजूकेशन में चला गया। धनेश ने कॉलेज में एम.बी.ए. की पढ़ाई तो पूरी कर ली; पर दुर्भाग्यवश वह धीरे-धीरे भौतिकता की चकाचौंध में अधिक उलझ गया। इसकारण अब उसे धनार्जन करने के लिए चौबीस घंटे भी कम पड़ने लगे। बिड़ला और बजाज जैसे बड़े-बड़े उद्योगपतियों की होड़ में अनेक फैक्ट्रीयाँ तो डाल ही लीं, कई कम्पनियाँ भी खोल लीं। साथ ही पुण्ययोग से पिता के पारम्परिक विजनिश शेयर मार्केटिंग में भी टॉप पर पहुँच गया।

'पुण्य का सूरज उगता है तो व्यक्ति उगते हुए सूर्य की भाँति चारों ओर से ऊपर उठता जाता है, किन्तु उसे यह भान नहीं रहता कि दिन के पूर्वार्द्ध में निरन्तर ऊँचाई को चढ़नेवाला सूर्य दिन के उत्तरार्द्ध में उसी तेजी से नीचे भी आता है। उसी तरह जीवन के पूर्वार्द्ध में जो पुण्योदय का सूरज ऊपर चढ़ रहा था, जीवन के उत्तर्रार्द्ध में पापोदय में परिवर्तित होकर नीचे की ओर आने वाला है; क्योंकि सभी दिन एक जैसे नहीं रहते। कहा भी है ह्न'सबै दिन जात न एक समान'

देखो, सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं करना चाहिए; क्योंकि धर्म परम्परा नहीं, प्रयोग है, कुलाचार नहीं, स्वपरीक्षित साधना है। '

पूर्व संस्कारों से यह बात ज्ञानेश के रोम-रोम में समाई थी। इसी कारण ज्ञानेश भौतिक वातावरण से भी अप्रभावित रहा और अपने पिता के कुलधर्म एवं लोक प्रचलित रूढ़िवादी परम्पराओं के प्रभाव से भी अछूता रहा। धर्म के विषय में भी वह पिता की परम्परागत लीक छोड़कर निष्पक्ष होकर निरन्तर धर्म के यथार्थ स्वरूप की गहराई तक पहुँचने के प्रयास में लगा रहा।

ज्ञानेश के पिता पुरातन पन्थी थे, परम्पराओं की लीक पर चलने में ही उनका विश्वास था।

पिता के पुरातनपन्थी, परम्पराओं की लीक पर चलने सम्बन्धी विचारों के संदर्भ में ज्ञानेश का यह कहना था कि ह्न '**धार्मिक नियमों का दृढ़ता से निर्वाह करना बहुत अच्छी बात है। सैद्धान्तिक कट्टरता भी बुरी बात नहीं है; परन्तु वह कट्टरता सुपरीक्षित एवं सुविचारित होनी चाहिए। बिना परीक्षा किये, बिना विचार किये किसी भी कुल परिपाटी को धर्म मानकर उसी लीक पर चल पड़ना और उससे टस से मस न होना ह्न यह धर्म का मार्ग नहीं है।** पर ऐसे कट्टरपंथियों को कैसे समझाये ? जो किसी की कुछ सुनना ही नहीं चाहते, अपनी लीक से हटना ही नहीं चाहते।' **(क्रमश:)**

बाल गीत वीडियो 'जैनी बच्चे सच्चे हम' की अपार लोकप्रियता के बाद

संस्कार परक बालगीत वीडियो का द्वितीय भाग

हम होंगे ज्ञानवान

प्रेरणा स्रोत – बाल ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन, खनियाँधाना

रचनाकार एवं संकलन – पण्डित विरागजी शास्त्री, जबलपुर

निर्माता – आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउण्डेशन (रजि.), जबलपुर (म.प्र.)

बाल संस्कार शिविर, जन्म दिवस आदि अनेक अवसरों पर वितरण के लिये सर्वोत्तम उपहार

संस्थाओं को विशेष छूट पर उपलब्ध

प्राप्ति स्थल/सम्पर्क सूत्र

सर्वोदय, 702 जैन टेलीकॉम, फूटाताल, जबलपुर-482002 (म.प्र.)

मो. 09827343205, 09300973705

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 49

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

आत्मा अमूर्त होने पर भी उसको किसप्रकार बंध होता है ? ह्न यह निश्चय करानेवाली 174वीं गाथा इसप्रकार है ह्न

रूवादिएहिं रहिदो पेच्छदि जाणादि रूवमादीणि।
दव्वाणि गुणे य जधा तह बंधो तेण जाणीहि।।

(हरिगीत)

जिसतरह रूपादि विरहित जीव जाने मूर्त को।
बस उसतरह ही जीव बाँधे मूर्त पुद्गलकर्म को।।

जिसप्रकार रूपादिरहित जीव रूपी द्रव्यों को और उनके गुणों को देखता और जानता है; उसीप्रकार अरूपी का रूपी के साथ बंधन होता है ह्न ऐसा जानो।

इस गाथा में आचार्य ने जानने को उदाहरण बनाया और बंधने को सिद्धांत बनाया। आचार्यदेव कहते हैं कि जिसप्रकार अमूर्तिक आत्मा मूर्तिक द्रव्यों को जानता है; उसीप्रकार अमूर्तिक आत्मा मूर्तिक द्रव्यों से बंध को प्राप्त होता है।

इसीलिए आचार्यदेव ने पर को जानने व बंधने ह्न इन दोनों को एक ही नय में रखा है। मैं पर से बंधा हूँ, मैं पर का कर्त्ता हूँ और मैं पर को जानता हूँ ह्न ये सभी कथन असद्भूतव्यवहारनय के हैं।

गाथार्थ को स्पष्ट करनेवाली टीका इसप्रकार है ह्न

''जैसे रूपादिरहित जीव रूपी द्रव्यों को तथा उनके गुणों को देखता-जानता है; उसीप्रकार रूपादिरहित जीव रूपी कर्म पुद्गलों के साथ बँधता है; क्योंकि यदि ऐसा न हो तो देखने-जानने के संबंध में भी यह प्रश्न अनिवार्य है कि अमूर्त मूर्त को कैसे देखता-जानता है ? और ऐसा भी नहीं है कि अरूपी का रूपी के साथ बंध होने की बात अत्यन्त दुर्घट है; इसलिए उसे दार्ष्टान्तरूप बनाया है, परन्तु दृष्टान्त द्वारा आबाल-गोपाल सभी को ज्ञात हो जाय; इसलिए दृष्टान्त द्वारा समझाया गया है।

जैसे पृथक् रहनेवाले मिट्टी के बैल को अथवा सच्चे बैल को देखने-जानने पर बालगोपाल का बैल के साथ संबंध नहीं है; तथापि विषयरूप से रहनेवाला बैल जिनका निमित्त है ह्न ऐसे उपयोगारूढ वृषभाकार दर्शन-ज्ञान के साथ का संबंध बैल के साथ संबंधरूप व्यवहार का साधक अवश्य है।

इसीप्रकार यद्यपि आत्मा अरूपीपने के कारण स्पर्शशून्य है; इसलिए उसका कर्मपुद्गलों के साथ संबंध नहीं है; तथापि एकावगाहरूप से रहनेवाले कर्मपुद्गल जिनके निमित्त है ह्न ऐसे उपयोगारूढ रागद्वेषादिभावों के साथ का संबंध कर्मपुद्गलों के साथ के बंधरूप व्यवहार का साधक अवश्य है।''

जिसप्रकार रूपादि से रहित होने पर भी जीव रूपी द्रव्यों को तथा उनके गुणों को जानता है; उसीप्रकार रूपी कर्मपुद्गलों के साथ बंधता है।

यदि कोई ऐसा प्रश्न करे कि अमूर्त मूर्त से कैसे बंध सकता है तो यह प्रश्न जानने-देखने के संबंध में भी खड़ा होगा।

आत्मा का रूपी पदार्थों को जानना दुर्घट भी नहीं है; क्योंकि जानना तो निरन्तर हो ही रहा है। जानने को इसीलिए यहाँ पर दृष्टान्त बनाया; क्योंकि आत्मा पर को जानता है ह्न यह जगप्रसिद्ध है। उदाहरण वही बनाया जाता है जो जगप्रसिद्ध होता है। बंधने में तो शंका हो सकती है; लेकिन जानने में नहीं। जो वादी और प्रतिवादी ह्न दोनों के लिए प्रसिद्ध हो, उसे उदाहरण कहते हैं; जिसे वादी और प्रतिवादी दोनों नहीं माने, वह तो उदाहरण हो ही नहीं सकता।

यहाँ पर टीका में जो यह कहा गया है कि यह बात कोई दुर्घट नहीं है ह्न इसका तात्पर्य यह है कि ऐसी घटना घट रही है। पर को जानना दुर्घट नहीं है का अर्थ यह है कि पर को जानना कोई कठिन कार्य नहीं है, यह तो आत्मा के स्वभाव का स्फुरायमान होना है।

टीका में इसी बात को उदाहरण देकर समझाया है कि पृथक् रहनेवाले मिट्टी के बैल को अथवा सच्चे बैल को देखने और जानने पर बाल-गोपाल का बैल के साथ संबंध नहीं है; तथापि विषयरूप से रहनेवाला बैल जिनका निमित्त है ऐसे उपयोगारूढ वृषभाकार दर्शन-ज्ञान के साथ का संबंध बैल के साथ संबंध रूप व्यवहार का साधक अवश्य है।

मान लो, किसी बच्चे ने असली बैल को नहीं जाना और अपने खिलौने वाले बैल को जाना, तो वास्तव में उसने बैल को नहीं जाना; अपितु उस बैल के आकार जो ज्ञान की पर्याय परिणमित हुई ह्न उसे जाना है। जिसप्रकार दर्पण में पदार्थ झलकते हैं; उसीप्रकार ज्ञान की पर्याय में बैल झलका। जिसप्रकार घट को तीन प्रकार का कहा जाता है ह्न ज्ञानघट, शब्दघट और अर्थघट; उसीप्रकार ज्ञान में एक अर्थ बना अर्थात् ज्ञान में एक पर्याय बनी; क्योंकि पर्याय भी तो अर्थ है। द्रव्य अर्थ, गुण अर्थ और पर्याय अर्थ के भेद से अर्थ भी तीन प्रकार का है।

इसप्रकार उस बालक के ज्ञान में जो बैल की पर्याय बनी ह्न उसने उसे जाना। ज्ञान की पर्याय को जानना तो निश्चय है और बैल को जानना व्यवहार है। चूँकि ज्ञान की पर्याय में बैल निमित्त था; इसलिए बैल का ही आकार बना, गधे का आकार नहीं। बैल जिसमें निमित्त है ह्न ऐसी ज्ञानपर्याय में अंदर एक बैल झलका। भगवान आत्मा ने ज्ञानपर्याय में जो बैल जाना; उसको जानना तो निश्चय है और ज्ञान में उस बैल के आकार बनने में जो बैल निमित्त था, उस बैल को जानना व्यवहार है। दुनिया में यह कोई नहीं कहता कि मैंने ज्ञान की पर्याय में बने बैल को जाना; अपितु सभी यही कहते हैं कि बैल को जाना।

जिसप्रकार किसी डॉक्टर ने किसी आदमी के एक्सरे को देखकर जाँच लिख दी और पूरी रिपोर्ट भी तैयार कर दी। उस डॉक्टर ने आदमी की शक्ल भी नहीं देखी, फिर भी सब कुछ देख लिया। उस बच्चे ने भी वास्तव में उसी बैल को देखा था, जो उसकी ज्ञान पर्याय में बना था; लेकिन व्यवहार से यह कहा जाता है कि उसने बैल को जाना।

उसीप्रकार आत्मा में जो राग पैदा हुआ, वह ज्ञान ने अपनी पर्याय से ही जाना। इसमें पर का कुछ भी नहीं है। जैसे ह्न जो ज्ञान में जो बैल का आकार बना था, उसमें बैल निमित्त था; उसीप्रकार आत्मा में जो राग पैदा हुआ उसमें परद्रव्य निमित्त है।

जिसप्रकार अशुद्धनिश्चयनय से उस राग भाव का कर्त्ता भगवान आत्मा को कहा जाता है; उसीप्रकार ज्ञान में जो ज्ञेय झलकते हैं अर्थात् ज्ञान में जो आकार बनते हैं, वे आकार जिस निमित्त से बनते हैं, उनको जानने का व्यवहार भी प्रचलित है। **(क्रमशः)**

देवलाली शिक्षण-प्रशि

क्षण शिविर की पत्रिका

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

जैन पत्रकारिता विशेषांक का विमोचन

जयपुर (राज.) : भारत के महामहीम उपराष्ट्रपति माननीय श्री भैरोसिंहजी शेखावत ने अपने आवास पर 2 अप्रैल को रजत जयन्ती वर्ष के उपलक्ष में जयपुर से प्रकाशित समन्वयवाणी (पाक्षिक) के जैन पत्रकारिता विशेषांक का विमोचन किया। इस अवसर पर समन्वयवाणी के सम्पादक श्री अखिल बंसल एवं उनके सहयोगी श्री मिलापचन्दजी डंडिया, श्री प्रवीणचन्दजी छाबडा, डॉ. रमेशचन्दजी निवाई, डॉ. प्रेमचन्दजी रांवका तथा श्रीमती शैल बंसल भी उपस्थित थे।

पत्र के सम्पादक अखिल बंसल ने 25 वर्षों के समन्वयवाणी के निरन्तर प्रकाशन की विकास यात्रा से उपराष्ट्रपतिजी को अवगत कराया। **ह्न अचिन जैन**

ब्र. यशपालजी द्वारा धर्म प्रभावना

दिनांक 17 मार्च से 8 अप्रैल, 2006 तक महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर द्वारा महती धर्मप्रभावना की गई। प्रत्येक नगर के समाचार निम्नानुसार है ह्न

दिनांक 17 से 27 मार्च, 2006 तक **माढा, जि. सोलापुर** में आपके द्वारा प्रात: छहढाला एवं रात्रि में जिनधर्म प्रवेशिका पर सारगर्भित प्रवचन हुये। ज्ञातव्य है कि विगत अनेक वर्षों में यहाँ किसी भी विद्वान द्वारा धर्म प्रभावना का कार्य नहीं हुआ था, इस कारण वहाँ की समाज तत्त्वज्ञान को सुनने के लिये विशेष लालायित थी। सभी ने विशेष उत्साह पूर्वक धर्मश्रवण किया। साथ ही प्रतिदिन स्वाध्याय करने की भी प्रतिज्ञा ली।

इसके पश्चात् 28 मार्च को कुर्डूवाडी व 30 मार्च को इचलकरंजी में आपके एक-एक प्रवचन का लाभ मिला।

दिनांक 2 से 8 अप्रैल, 2006 तक **नागपुर** में प्रात: एवं रात्रि में पुरुषार्थसिद्ध्युपाय के आधार से मोक्षमार्ग की पूर्णता विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। साथ ही नागपुर के लक्ष्मीनगर एवं प्रतापनगर की समाज को भी आपके एक-एक प्रवचन का लाभ मिला। सभी स्थानों पर देवलाली प्रशिक्षण शिविर में पधारने हेतु आमंत्रण भी दिया गया।

परीक्षा सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ नेमिनाथ जैन कॉलोनी में श्री रविन्द्र पाटनी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित एवं श्री वीतराग-विज्ञान परीक्षा बोर्ड जयपुर द्वारा संचालित रविवारिय जैन पाठशाला के छात्रों की दिनांक 26 मार्च को क्रमबद्धपर्याय विषय की परीक्षा सम्पन्न हुई।

पाठशाला संचालक डॉ. महावीरप्रसादजी जैन ने बताया कि गत एक वर्ष से क्रमबद्धपर्याय की कक्षा संचालित की जा रही है, जिसमें 28 पुरुषों एवं महिलाओं ने भाग लिया। परीक्षा अधिकारी के रूप में पण्डित सुजानमलजी गदिया, पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, श्री सुरेशजी भोरावत एवं पण्डित खेमचन्दजी शास्त्री की उपस्थिति थी।

अष्टान्हिका समाचार

1. जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री नन्दीश्वर द्वीप मण्डल विधान तथा सम्यक्चारित्र विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शांतिलालजी सौगाणी महिदपुर के प्रात: समयसार व रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर सारगर्भित प्रवचन हुये।

पर्व के पश्चात् 150 यात्रियों द्वारा बावनगजा, ऊन, पांवागिरि, सिद्धवरकूट, पुष्पगिरि आदि तीर्थों की वंदना की गई। यात्रा के दौरान पण्डित शांतिलालजी एवं पण्डित राजेन्द्रजी के प्रवचनों का लाभ मिला।

उक्त यात्रा का आयोजन श्री वीतराग-विज्ञान मण्डल के संयोजन में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबलपुर द्वारा किया गया।

2. सिद्धवरकूट (म.प्र.) : यहाँ क्षेत्र पर श्री दिग. जैन महिला स्वाध्याय मण्डल अकोला द्वारा नन्दीश्वर विधान का आयोजन किया गया। अन्तिम दिन समवशरण विधान भी सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सौ. लताजी रोम के सुबह-शाम योगसार पर प्रवचन हुये। लगभग 1500 लोगों ने धर्मलाभ लिया। **ह्न सौ. चंदा फुरसुले**

ऋषभदेव जयन्ती सम्पन्न

बैंगलोर (कर्ना.) : यहाँ श्री दि. जैन ट्रस्ट द्वारा दिनांक 24 मार्च को भगवान ऋषभदेव जन्मकल्याणक महोत्सव के उपलक्ष में ऋषभदेव पंचकल्याणक विधान का आयोजन किया गया। विधानादि के समस्त कार्य पण्डित किशोरजी बंड एवं पण्डित अखिलेशजी बरां ने सम्पन्न कराये।

वैराग्य समाचार

1. मुम्बई निवासी श्री भँवरलालजी भैंरूलालजी संगावत का दिनांक 9 मार्च को देहावसान हो गया। आप गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त थे। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान को 1001/- रुपये की दान राशि श्री भगवतीलालजी भोरावत की ओर से प्राप्त हुई।

2. शिरडशहापुर निवासी वयोवृद्ध विद्वान पण्डित रमेशचन्दजी महाजन का 87 वर्ष की आयु में 25 मार्च को देहावसान हो गया। आप सोनगढ-जयपुर के शिविरों में बराबर आया करते थे। आपकी स्मृति में प्रेमचन्दजी महाजन की ओर से 51/रुपये प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अप्रैल (द्वितीय) 2006
RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व धर्मदर्शन तथा इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127